Functions of the State according to Liberals

उदारवादियों के अनुसार राज्य के कार्य -

उदारवादी विचारधारा एक निश्चित और क्रमबद्ध विचारधारा नहीं है। वास्तव में यह कोई एक दर्शन नहीं वरन अनेक विचारों का एक सम्मिश्रण है। इस कारण 19वीं शदी के तीसरे दशक तक जहाँ इसे व्यक्तिवाद का पर्याय माना जाता था, वहीं बाद में ग्रीन जैसे उदारवादियों ने नकारात्मक स्वतंत्रता के स्थान स्थान सकारात्मक स्वतंत्रता पर जोड़ दिया और इस बात पर बल दिया कि समाज के सभी सदस्यों के कल्याण के लिए राज्य द्वारा व्यक्तियों के जीवन में हस्तक्षेप करना पड़े तो वह ऐसा कर सकता है।

~~[illegible]~~

सर टोरी ने उदारवाद की स्पष्ट परिभाषा करते हुए लिखा है कि "उदारवाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता, न्यायिक सुरक्षा और संवैधानिक राज्य का सिद्धान्त और व्यवहार दोनों है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का समुचित विकास और सम्पूर्ण समाज के कल्याण के लिए सामंजस्य स्थापित करना ही उदारवाद का मूलमंत्र है।

इसी प्रकार राज्य के कार्यों के सम्बन्ध में भी उदारवाद के मुख्य रूप से दो रूप बताये जाते हैं- (1) परम्परागत उदारवाद (2) आधुनिक उदारवाद।

परम्परागत उदारवाद के प्रतिनिधि विचारक के रूप में लॉक तथा जे० एस० मिल का नाम लिया जा सकता है। मूल रूप से उदारवाद का जन्म

Scanned with CamScanner

~~स्वेच्छाचारी~~ स्वेच्छाचारी शासन और अन्याय के विरुद्ध एक स्वतंत्रता आन्दोलन के रूप में हुआ था और इसका मूल तत्व स्वतंत्रता ही रहा।

परम्परागत उदारवादियों ने ~~प्रमुख~~ पुरस्कर्ताओं व्यक्तियों को सर्वोपरि स्थान दिया। इसने इस बात का प्रतिपादन किया कि व्यक्ति को अपने जीवन के सभी क्षेत्रों के अन्तर्गत स्वयं अपने स्वतन्त्र निर्णय करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त होना चाहिए। व्यक्तियों के जीवन और उनके रहन-सहन में राज्य या समाज तथा अन्य व्यक्तियों द्वारा उस समय तक हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए, जब तक कि सामाजिक हित की दृष्टि से इस समाज का हस्तक्षेप नितान्त आवश्यक न हो गया हो।

आर्थिक क्षेत्र में उसने व्यक्तियों द्वारा संचालित उद्योग तथा व्यापार में राज्य द्वारा हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि राज्य द्वारा Policy of Laissez-fair अपनायी जानी चाहिए।

उदारवादियों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्वतंत्रता पर भी जोर दिया है। यह एक राज्य द्वारा दूसरे राज्य के विरुद्ध बल प्रयोग का विरोधी रहा है और उनका विचार है कि शान्ति और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के आधार पर कार्य किया जाना चाहिए।

उदारवाद राजनीतिक स्वतंत्रता का प्रबल समर्थक रहा है। यह उदारवादियों की सर्वोत्तम देन है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित बातें आती हैं—

(क) नागरिकों को अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार
(ख) निर्वाचित होने का अधिकार।
(ग) सार्वजनिक पद ग्रहण करने का अधिकार

Scanned with CamScanner

(घ) राजनीतिक मामलों में समुचित जानकारी प्राप्त करने का अधिकार।

इस प्रकार उपर्युक्त बातों पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि बहुत कुछ सीमा तक उदारवाद, व्यक्तिवाद का सहयोगी दर्शन है।

इस प्रकार उदारवाद 19वीं सदी के मध्य तक इस बात पर जोर दिया है कि राज्य का कार्य क्षेत्र संकुचित होनी चाहिए। किन्तु इसके बाद के उदारवादियों द्वारा राज्य के कार्यक्षेत्र में अधिक वृद्धि का प्रतिपादन किया गया। इस नवीन का प्रारम्भ ग्रीन के साथ हुआ। अतः ग्रीन को आधुनिक जनतंत्रात्मक विचारधारा का प्रतिनिधि विचारक कहा जा सकता है। उसने राज्य को कभी भी एक साध्य नहीं माना। उसके अनुसार राज्य एक साध्य की प्राप्ति का साधन मात्र है, और साध्य है, राज्य में रहनेवाले व्यक्तियों का पूर्ण नैतिक विकास। उसने बार-बार इस बात पर जोर दिया कि संस्थाओं का अस्तित्व व्यक्तियों के लिए होता है। व्यक्तियों का अस्तित्व संस्थाओं के लिए नहीं।

इस प्रकार जहाँ परम्परागत उदारवाद राज्य को एक आवश्यक बुराई मानते हुए सामाजिक और आर्थिक जीवन में उसके प्रत्येक हस्तक्षेप का विरोध करते हैं वहीं ग्रीन उसे नैतिक संगठन मानता है। वह परम्परागत उदारवादियों की इस बात से भी सहमत नहीं है कि राज्य का कार्य केवल रक्षा करना है। बल्कि उसके अनुसार राज्य का प्रमुख कर्तव्य व्यक्ति द्वारा उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करवाना है। राज्य यद्यपि व्यक्तियों को प्रत्यक्ष रूप से नैतिक नहीं बना

Scanned with CamScanner

सकता, लेकिन उसके द्वारा नैतिक विकास ~~सम्भव है~~ ~~व्यक्तियों~~ के मार्ग में आनेवाली बाधाओं को दूर कर उनके नैतिक विकास में सहायता पहुँचा सकती है।

जो भी हो, ग्रीन ने उदारवाद को एक नया धार्मिक विश्वास प्रदान किया और उसे बदलती हुई परिस्थितियों में जनहित और जनतंत्रात्मक व्यवस्था के अनुकूल बनाया। उदारवाद को यह नवीन रूप प्रदान कर ग्रीन ने सर्वाधिकार के विरुद्ध उदारवाद की रक्षा करने का ही कार्य किया है।

राज्य के कार्यों के सम्बन्ध में उदारवादियों की आलोचनाएँ निम्नलिखित आधार पर की गई हैं।

उदारवादियों का यह तर्क कि व्यक्ति की आत्मनिर्भरता आवश्यक है और इस कारण राज्य का कार्य क्षेत्र सीमित होनी चाहिए, एकदम ठीक नहीं है। व्यक्ति के पूर्ण विकास के लिए आज राज्य की आवश्यकता है।

आलोचकों का यह भी कहना है कि उदारवाद मानव प्रकृति का गलत चित्रण करता है। मनुष्य मौलिक रूप से स्वार्थी नहीं होता। वह अपनी भलाई के अलावा दूसरों की भी भलाई चाहता है।

जो भी हो, आज उदारवाद की कितनी भी आलोचनाएँ की जाए, किन्तु विगत कई ~~शताब्दी~~ शताब्दियों में उदारवाद का बोलबाला रहा है और एक राजनीतिक विचारधारा के रूप में इसने विश्व को लोकतांत्रिक देश की राजनीति को प्रभावित किया है और उन्हें नई दिशा प्रदान की है। किन्तु ~~20वीं शताब्दी~~ ~~इसके~~ बाद में चलकर इसे समाजवादी और फासीवादी विचारधाराओं की चुनौतियों का सामना करना पड़ा और इस प्रकार इसका पतन प्रारम्भ हुआ।